डॉ0 नामवर सिंह की प्रगतिवादी आलोचना

साधना ओझा*

डॉ नामवर सिंह हिन्दी आलोचना के शिखर–पुरूष माने जाने हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने हाल हीं में उन्हें ''भारत–भारती'' पुरस्कार देने की घोषणा की है जो उनकी रचना शीलता का सम्मान है तथा केन्द्र सरकार ने उन्हें महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्री हिन्दी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति मनोनीत किया है जो उनकी क्रिया शीलता की संपुश्टि है।

बीसवीं सदी के छठे दशक से हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में उनकी सक्रिय हिस्सेदारी रही है। आज भी उनमें नये से नये विचारों को आत्मसात करने की अद्वितीय क्षमता बरकरार है। अपने चिंतन को साहित्यिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों से मुक्त रखने की क्षमता में ही उनकी विलक्षणता है।

नामवर जी हिन्दी की सबसे विवादास्पद हस्ती हैं। रणनीतिक आलोचक, ''साहित्यिक डॉन'', ''सर्जक योद्धा'' जैसे शब्द उनके लिए प्रयुक्त किये जा चुके हैं। समकालीन साहित्यिक परिदृष्य में उनकी अपराजेय उपस्थिति अपने मौलिक विचारों के कारण है। विवाद छिड़ने पर उनके ये विचार सान चढ़ाते हैं और भाषा तदनुरूप धारदार हो जाती है। इसलिए वे वाद–विवाद–संवाद के अचार्य माने जाते हैं।

डॉ नामवर सिंह की आलोचना यात्रा पृथ्वीराज रासो से लेकर समकालीन साहित्य तक निरंतर गतिमान है। वे एक अन्वेशक और शोधार्थी की भाँति प्राचीन साहित्य की प्रगतिशीलता को खोजते और विश्लेषित करते हैं। मार्क्सवादी दृष्टि से समकालीन कविता व कहानी का मूल्यांकन, समसामयिक आलोचना के क्षितिज पर उनकी उपस्थिति को अपराजेय बनाता है। अलोचक के रूप में अपनी परंपरा को स्पष्ट करते हुए नामवर जी ने कहा है–''जैसे रचना के क्षेत्र में हर सार्थक रचनाकार कहीं न कहीं अपने लिए एक परंपरा ढूँढ़ता है चिंतन के क्षेत्र में भी अपने लिए एक परंपरा ढूँढ़ने की जरूरत आलोचक को महसूस होती है। हिन्दी में यह उल्लेखनीय बात है कि इस परंपरा को खेलने एवं ढूँढ़ने उससे अपने आप को जोड़ने का काम गैर मार्क्सवादी आलोचकों की अपेक्षा मार्क्सवादी आलोचकों ने ज्यादा किया है।'' इसका श्रेय सबसे ज्यादा डॉ रामविलास शर्मा को दिया जाना चाहिए। रामचन्द्र शुक्ल पंडिताऊ आलोचक समझे जाते थे। रामविलास शर्मा ने उन्हें ऐसे लोकवादी के रूप में उपस्थित किया कि लगा कि प्रगतिशील लेखक शुक्ल जी से अपने आप को जोड़कर लाभन्वित हो सकते हैं। आज यदि मलयज जैसे आलोचक शुक्ल जी की ओर आकृष्ट हो रहे हैं तो कही न कही इसका श्रेय डॉ रामविलास शर्मा को है।

हिन्दी में शुक्ल–द्विवेदी–शर्मा की आलोचनाएँ उनके लिए परंपरा की अहमियत रखी है तो पश्चिम में विकसित होने वाली मार्क्सवादी आलोचना में भी वे अपनी परंपरा देखते हैं जिसमें मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन ग्राम्शी, लुकाच और वाल्टर वेन्जामिन विशेष उल्लेखनीय नाम हैं। प्रसंगवश उनके साहित्य में उपर्युक्त नामों का उल्लेख मिलता है। लेकिन विश्लेषण से असम्बद्ध होकर सिद्धांतों की दुहाई देने की प्रवृति नामवर जी को स्वीकार्य नहीं है। वे मार्क्स या लेनिन के प्रमाण को आलोचना के प्रमाणिक होने की गारंटी नहीं मानते सामान्य सिद्धांत निरूपण के लिए वे कृति के मूल्यांकन की ओर प्रवृत नहीं होते। नामवर जी की पुस्तकाकार प्रकाशित रचनाओं में एक दोहरा संघर्ष देखा जा सकता है। कहीं वे नई कविता में बढ़ती जडीभूत सौंदर्यानुभूति का विरोध करते हैं तो कहीं मार्क्सवादी आलोचना में प्रक्षिप्त स्थूल समाज शास्त्रीयता का। उनके इस दोहरे संघर्ष के कारण आलोचकों ने उनमें अन्तर्विरोध देखा है और अवसरवादीता का आरोप लगाया है। परन्तु नामवर जी के लेखन को तत्कालीन साहित्यक प्रवृतियों के परिप्रेक्ष्य में देखें तो स्पष्ट है कि इस दौर की आवश्यकता यही थी।

डॉ नामवर सिंह की गणना हिन्दी समालोचना के अर्न्तगत एक प्रखर तथा गंभीर समालोचक के रूप में की जाती है और हैं भी। उनकी यह खासियत है कि उन्होंने कवियों के साथ–साथ आधुनिक काल के नये से नये साहित्यकारों को अपने समालोचना का सब्जेक्ट बनाया है। उन्होंने पृथ्वीराज रासो से लेकर मुक्तिबोध तथा घूमिल तथा लम्बी और विस्तृत काव्य परम्परा और प्रेमचन्द से निर्मल वर्मा तक के कथा साहित्य की परम्परा का सम्यक अनुशीलन किया है। सबसे पहले हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग (1952) नामक पुस्तक से साहित्य क्षेत्र में जाने गये। यह पुस्तक स्नाकोत्तर कक्षा में लघु शोध प्रबंध के रूप में लिखी गई थी। उन्होने पृथ्वीराज रासो की भाषा (1956) पर डॉक्टरेट किया है। इन थीसिसों के अलावा उनके महत्वपूर्ण आलोचना ग्रन्थ हैं–

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ (1954) 2. छायावाद (1955) 3. इतिहास और आलोचना (1957) 4. कहानी नई कहानी (1964) 5. कविता के नये प्रतिमान (1968) 6. दूसरी परम्परा की खोज (1982) 7. वाद विवाद संवाद। इसके अतिरिक्त उनकी सद्य प्रकाशित रचनाओं में आलोचक मुख'' से तथा'' काशी के नाम'' प्रमुख है। स्थूल एवं कट्टर मार्क्सवादीयों द्वारा स्वीकृत विचार धारा की संकीर्ण समझ से डॉ

शोधार्थी संकर मोचन नगर, आरा

नामवर सिंह का कोई सारोकार नहीं है। उनकी विविध रचनाओं से उनकी मान्यता स्पष्ट होती है कि विचारधारा कला में आरोपित नहीं होनी चाहिए, वरन कला के साथ उसका इस प्रकार का एकात्म होना चाहिए कि वह अपने पुरे प्रभाव के साथ विद्यमान होते हुए भी कलाकृति के सौंदर्य नियमों का अतिक्रमण न करें।

छायावादी काव्यधारा का विरोध अनेक आलोचकों ने इस आधार पर किया कि उसमे राष्ट्रीय जागरण को अभिव्यक्ति नहीं मिली। युग धर्म की अपेक्षा करने के कारण उसे पलायनवादी कहा गया। नामवर जी ने छायावाद सम्बन्धी अपने विवेचन से यह स्पष्ट किया कि छायावाद पर राष्ट्रीय जागरण का स्पष्ट व प्रत्यक्ष प्रभाव यदि प्रतीत नहीं होता तो यह छायावाद का कोई अपराध नहीं है। ''कविता राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं का कविकल अनुवाद नहीं है। विविध राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक घटनाएँ, मानव व्यक्ति के मन पर जो सम्मिलित प्रभाव डालती हैं, कविता उसकी भावात्मक प्रतिक्रिया है''। काव्य में अभिव्यक्त अनुभूति इतनी संष्लिष्ट होती है कि उसमें से राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक इत्यादि तत्वों का विश्लेषण सरलता से नहीं किया जा सकता। गीत की व्यथा का मूल स्त्रोत कौन सी समाजिक घटना है यह उस गीत से उतराती नहीं फिरती जो चट से छीनकर हथिया ली जाये। साहित्य अंततः साहित्य ही है। वह परिस्थितियों के सहित सम्मिलित प्रभाव की अभिव्यंजना है।

साहित्य मानव के संम्पूर्ण व्यक्तित्व की वाणी है। अभिव्यक्त जीवन की इकाई का प्रतिबिम्ब है। उपर्युक्त उद्धरण छायावादी साहित्य से संबधित है किंतु वह मार्क्सवादी दृष्टि से किसी भी काल विशेष के साहित्य की समीक्षा करने वाले के लिए प्रासंगिक है।

वामपंथी लेखकों को नामवर जी सचेत करते हैं कि मार्क्सवाद केवल एक राजनीतिक सिंद्धात नहीं, बल्कि एक विश्वदृष्टि है। राजनीति, निश्चय ही उसका एक महत्वपूर्ण पक्ष है। समानधर्मा राजनीतिज्ञों के अनुभवज्ञान से लाभ उठना तो ठीक है किन्तु सृजनशील साहित्कार के पास एक विश्वदृष्टि होनी चाहिए। वास्तविकता के विषय में अभूतपूर्व अंतर्दृष्टि देकर हीं उनके मनोगत विश्वदृष्टि वाले लेखक भी हमें अभिभूत करते हैं और अपनी रचना पढ़ने के लिए वाध्य करते हैं। इसलिए वामपंथी लेखन का भी प्रयास यही होना चाहिए कि उसके दुश्मन और विरोधी भी वास्तविकता में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उसकी रचना पढ़ने को विवश हो। यह तभी संभव है जब रचना इतनी वास्तविक और कलात्मक हो कि पढ़नेवाला यह कहने के लिए बाध्य हो कि उसकी विचारधारा तो नापसंद है पर कम्बख्त लिखता खूब है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. छायावाद–डॉ0 नामवर सिंह
2. वाद विवाद संवादः–डॉ0 नामवर सिंह
3. आलोचना संदर्भ मार्क्सवादः–प्रो0 (डॉ0) ललन प्रसाद सिंह
4. हिन्दी आलोचना का विकासः–डॉ0 नन्दकिशोर नवल